कहना है कि ईश्वरवाद का उद्देश्य मनुष्य आत्मिक प्रकृति की संतुष्टि के लिए होता है

ईश्वरवाद का उदाहरण

भारतीय और पाश्चात्य दोनों दर्शन में मिलता है पाश्चात्य दर्शन में एक प्रमुख नाम डेकार्ट, बर्कले इत्यादि का है। इनके अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान है और विश्व का स्रष्टा है। ईश्वर विश्व का आधार है मनुष्य के लिए ईश्वर आवश्यक है और ईश्वर के लिए मनुष्य। भारतीय विचारकों में रामानुज और निम्बार्क आदि इसके प्रमुख हैं। रामानुज के अनुसार ईश्वर ही एक मात्र परमार्थ सत्ता है। वह अनन्त ज्ञान और शुभ गुणों से युक्त है। ईश्वर विश्व का उपादान और निमित्त दोनों कारण है

रामानुज की तरह निम्बार्क का कहना है कि ईश्वर सर्वज्ञ तथा पूर्ण तत्व नहीं है ईश्वर सभी प्रकार के कल्याणकारी गुणों से युक्त है ईश्वरवादी दार्शनिकों का कहना है कि ईश्वर विश्व में व्याप्त है। विश्व की उत्पत्ति ईश्वर की प्रेरणा से ही सम्भव है ईश्वरवाद यह स्वीकार करता है कि ईश्वर कल्याणकारी भावना है जब ईश्वर मनुष्य के प्रति उपकार भी करता नहीं है